मानव-जीवन के भाष्यकार

ऋषि टाल्स्टाय

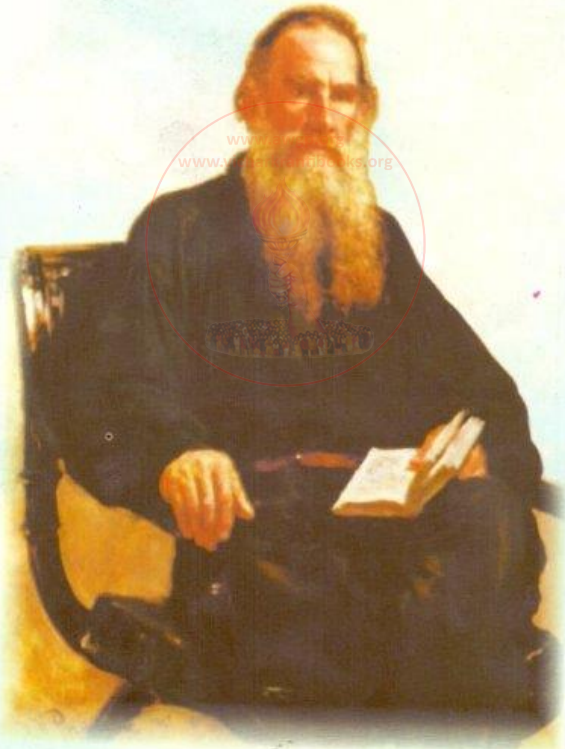

www.

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

मानव-जीवन के भाष्यकार—

ऋषि टाल्सटाय

"एक समय था जब मैं खुले शब्दों में कह दिया करता था कि हमारा ईसाई धर्म बिल्कुल झूठ है। किंतु आगे चलकर इसमें परिवर्तन हो गया। तब मैंने संदेह करने में तो कमी कर दी, किंतु मुझे इस बात का पक्का विश्वास हो गया, जिस धर्म को हम मान रहे हैं, उसमें पूरी सच्चाई नहीं है। साधारण मनुष्यों द्वारा माने जाने वाले धर्म में तो वास्तविकता थी, क्योंकि इसमें लेशमात्र संदेह नहीं कि सच्चाई के बिना जीवित रहना असंभव है। यह सच्चाई मुझे मालूम थी और मैं उसी के अनुसार चलता था। पर इस सच्चाई के साथ भी झूठ मिला था। यह ठीक है कि साधारण लोगों के विचारों में पादरी लोगों (पंडा-पुरोहितों) की अपेक्षा अधिक सच्चाई थी, किंतु वह असत्य से सर्वथा मुक्त न थे।"

"सच्चाई और झूठ कहाँ से आये ? दोनों "चर्च" (ईसाई धर्म) से ही निकले हैं। एक समय था कि मैंने धार्मिक साहित्य को बिल्कुल व्यर्थ और निस्सार समझकर अंतिम नमस्कार कर लिया था, पर सच्चाई और झूठ की जाँच करने के लिये मुझे उसका अध्ययन करना पड़ा। यद्यपि यह बात आश्चर्यजनक प्रतीत होगी, किंतु साहित्य भी मोक्ष का एक द्वार है। जब मैंने धार्मिक साहित्य का अध्ययन किया, तो मुझे मालूम हुआ कि उससे भी विज्ञान आदि के समान प्रत्यक्ष परिणाम निकाले जा सकते हैं, तो भी मैं प्रत्येक धार्मिक बात का तात्पर्य नहीं समझ सकता। जिस प्रकार हम संसार की उत्पत्ति का ठीक वर्णन नहीं कर सकते। उसी प्रकार अन्य अनेक बातों का भी ठीक स्वरूप शब्दों द्वारा वर्णन कर सकना संभव नहीं। मेरा प्रयत्न इतना ही था कि जितना बन पड़े, मैं सच्चाई के निकट तक पहुँच जाऊँ। मेरी यह इच्छा बिल्कुल नहीं थी कि मैं प्रत्येक बात की वास्तविकता जान लूँ, क्योंकि मैं जानता था कि यह एक असंभव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बात है। मनुष्य की बुद्धि परिमित है। पर जब मैंने यह जान लिया कि धर्म-विश्वासों में सत्य और असत्य दोनों मिले हैं, तो मैंने अपना यही कर्तव्य समझा कि मैं सच्चाई को झूठ से पृथक् करूँ।"

रूस के ऋषि टाल्सटाय (सन् १८२८ से १९१० तक) के धर्म संबंधी विचारों का स्वलिखित उपर्युक्त वर्णन पढ़कर पाठकों को अवश्य ही यह अनुभव होगा कि वे धर्म के सच्चे जिज्ञासु थे और उन्होंने उसके तत्त्व को बहुत अंशों में जान लिया था। वे उस धर्म से अपना पीछा छुड़ा चुके थे, जिसकी विशेषताएँ केवल दंभ और प्रतारणा होती हैं। उसके बजाय उन्होंने उस "धर्म को समझने और पालन करने की चेष्टा की थी, जिसे सभी देशों और जातियों के मनुष्य पालन कर सकते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धर्म के संबंध में खोज—

टाल्सटाय का जन्म जिस घराने में हुआ था, वह "यूनानी-संप्रदाय" का अनुयायी था। यह ईसाई मत की ही एक शाखा थी, जिसमें प्रार्थना और व्रत आदि पर बहुत जोर दिया जाता था और ईसा तथा मरियम की मूर्तियों की उपासना भी की जाती थी। जिस समय वे स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, वह समय आधुनिक विज्ञान की वृद्धि का था और उसकी कुछ पुस्तकों को पढ़कर अथवा दूसरों से ही उन बातों को सुनकर अनेक लोग धर्म और ईश्वर के अस्तित्व से इनकार करने लगते थे। उस युग में इस प्रकार की वैज्ञानिकता का प्रभाव भारतवर्ष पर भी पड़ा था और जनता में यह प्रसिद्ध हो गया था कि "अंग्रेजी पढ़ने से मनुष्य नास्तिक हो जाता है।" इस शिक्षा का सबसे अधिक प्रचार बंगाल में ही हुआ था और फलस्वरूप बहुसंख्यक व्यक्ति भारतीय धर्म से विमुख होकर उसकी हँसी उड़ाने लगे थे। जब यह भावना बहुत अधिक बढ़ने लगी तो इसी की प्रतिक्रियास्वरूप वहाँ रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद जैसे महापुरुषों का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने भारतीय धर्म की मान्यताओं का महत्त्व सिद्ध करके उस "वैज्ञानिक विचारधारा" के प्रवाह को रोका था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टाल्सटाय के आत्म-चरित्र से विदित होता है कि अब से डेढ़ सौ-पौने दो सौ वर्ष पहले रूस के शिक्षित समाज की भी ऐसी ही दशा हो गई थी। ईश्वर, धर्म और भगवान् की उपासना आदि बातों का मजाक उड़ाया जाने लगा था। इस पर प्रकाश डालते हुए टाल्सटाय ने लिखा है—

"मुझे याद है कि जब मैं १२ वर्ष का था, तो एक दिन एक लड़का मेरे पास आया और कहने लगा कि स्कूल में एक नया अन्वेषण हुआ है कि ईश्वर कोई चीज नहीं है। जो कुछ हमको उसके विषय में सिखाया जाता है, वह सब लोगों की गढंत है। उस लड़के की बात सबको बड़ी मनोरंजक जान पड़ी। मुझे यह भी याद है कि जब मेरा भाई प्रतिदिन गिरजा (मंदिर) में जाया करता था, तो सदैव हम सब उस पर हँसा करते थे। हमने हँसी में उसे 'हजरत नूह' का नाम दे दिया था।"

"मेरा एक मित्र एक दिन कुछ लोगों के साथ शिकार खेलने गया। दोपहर को विश्राम करने से पूर्व उसने घुटनों के बल बैठकर 'प्रार्थना' की, जैसा कि उसका प्रतिदिन करने का नियम था। उसका भाई कुछ दूर बैठा हुआ यह सब देख रहा था। जब वह प्रार्थना समाप्त कर चुका तो उसके भाई ने कहा—"क्या अब तक तुम्हारे विचार ऐसे ही हैं।" उसकी अपने भाई से इस संबंध में कुछ बातचीत हुई और उस दिन से उसने गिरजे में जाना और प्रार्थना करना छोड़ दिया।"

टाल्सटाय लिखते हैं कि आजकल हमारा पुराना धर्म केवल कुछ विश्वासों पर टिका रहता है। वे विश्वास आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से स्वयंमेव नष्ट हो जाते हैं। बहुत से मनुष्यों को अपने इन धार्मिक भावों के नष्ट होने की खबर भी नहीं लगती और वे यों ही जीवन व्यतीत कर डालते हैं। उन्होंने स्वयं अपने विषय में बतलाया है—

"आरंभिक अवस्था में जो धार्मिक विचार मेरे भीतर भरे गये थे, वे धीरे-धीरे नष्ट हो गये। मैं १५ वर्ष की आयु से ही दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने लगा था। इस कारण मुझे अपने "काफिर"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(धर्म विमुख) हो जाने का पता था। सोलह वर्ष की आयु से मैंने प्रार्थना करनी छोड़ दी थी तथा व्रतों को अंतिम नमस्कार कर लिया था। बचपन में सीखे हुए धार्मिक सिद्धांतों पर से मेरा विश्वास बिल्कुल उठ गया था।''

हम भारतवासी सबसे अधिक "धर्म''—"धर्म'' चिल्लाते हैं, पर हमारा धर्म कैसा खोखला हो गया है ? इस पर शायद ही कोई विचार करता है। टाल्सटाय के उपर्युक्त आत्म-निरीक्षण से हम अनुभव करते हैं कि वास्तव में हमारे यहाँ के शिक्षित लोगों में भी लाखों ऐसे ही हैं, जो सांसारिक जीवन में पड़कर धर्म के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को बिल्कुल भूल जाते हैं। यदि वे मंदिरों में जाते भी हैं, तीर्थों में स्नान भी कर लेते हैं, मूर्तियों पर दो-चार पैसे चढ़ा भी देते हैं, तो यह सब एक सैर-तमाशे की तरह ही होता है। जन्म भर उनके मन में कभी यह ख्याल नहीं उठता कि धर्म के विषय में गंभीरता से कुछ विचार करें और उन सिद्धांतों के अनुसार अपने जीवन को धार्मिक बनाने का प्रयत्न करें। वे धर्म के ऊपरी प्रदर्शन से ही संतुष्ट हो जाते हैं और मन को समझा लेते हैं कि 'हम धर्म का पालन कर तो रहे हैं।'

चरित्र का पतन—

जब धर्म की नींव कमजोर पड़ जाती है और उसका सार-तत्त्व निकल जाता है, तो मनुष्य का चरित्र भी कायम नहीं रह सकता। ऐसा होने पर भी कुछ लोग तो 'धर्म' का नाम लेते रहते हैं और थोड़ा-बहुत दिखावा भी कर देते हैं और कुछ लोग बड़ी शान के साथ अपने को ऐसी 'बेवकूफी' की बातों से अलग बतलाने लगते हैं और प्रायः धर्म का मजाक उड़ाते रहते हैं। इन दोनों ही प्रकार के लोगों का चारित्रिक और नैतिक पतन अनिवार्य होता है। उनकी दृष्टि में खाना, कमाना, भोग करना ही मनुष्य-जीवन का सार रह जाता है और उसी की पूर्ति में वे सदा लगे रहते हैं। इस संबंध में टाल्सटाय के अनुभव वास्तव में बड़े करुणा-जनक और हृदय-द्रावक हैं। उनका वर्णन करने में उन्होंने जिस स्पष्टता और साहस का परिचय दिया है, वह अद्वितीय है। वे जन्म से ही एक बहुत प्रतिष्ठित और राजवंश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से संबंधित घराने के थे और बाद में भी अपने उद्योग तथा त्याग और तप से जगत्-पूज्य बन गये। पर आरंभिक जीवन में धर्म के बिना उनकी क्या दशा हुई ? इसका वर्णन करते हुए वे कहते हैं—

"मैं हृदय से इस बात की खोज में था कि किसी प्रकार नेक तथा अच्छा मनुष्य बनूँ। परंतु इस नेकी की खोज में, मैं अकेला ही था। अन्य लोग इसे सनकीपन बतलाते थे। जब मैंने अपने इष्टमित्रों तथा परिचितों के सम्मुख अपनी नेक बनने की हार्दिक इच्छा प्रकट की तो लोगों ने मेरी हँसी उड़ाई और मुझको घृणा की दृष्टि से देखा। किंतु जब मैंने पाशविक वृत्तियाँ प्रकट कीं तो लोगों ने मेरी प्रशंसा की। मैंने अपने उच्चवंशीय समाज में सांसारिक वासनाओं, विषय-भोग, घमंड, क्रोध, बदला लेना आदि का ही अधिक सम्मान होते देखा। जब मैंने भी इस विषय में अपने पूर्वजों का अनुकरण किया, तो मुझे प्रतीत हुआ कि लोग मुझसे प्रसन्न हैं और मैं कोई नई या अनोखी बात नहीं कर रहा हूँ। मेरी चाची जो वास्तव में बड़ी सज्जन महिला और मेरी हितैषी थी, मुझसे कहा करती थी "मैं तुम्हारी भलाई के लिए सबसे अधिक इस बात की इच्छुक हूँ कि तुम्हारा किसी विवाहिता स्त्री से अनुचित संबंध हो जाय। दूसरी बड़ी इच्छा यह है कि तुम महाराज के मुसाहिब हो जाओ। तीसरी इच्छा यह है कि तुम्हारा विवाह किसी धनवान् स्त्री से हो, जिसके दहेज में बहुत से नौकर आवें।"

"जब मैं अपने जीवन के उस समय पर दृष्टि डालता हूँ, तो मुझे बड़ा कष्ट और घृणा होती है। मैंने युद्धों में नर-हत्या की। दूसरों की जान लेने के विचार से द्वंद्व-युद्ध (डुएल्स) लड़े। जुआ खेला। कृषकों के कठिन परिश्रम से उपार्जित धन को व्यर्थ के कामों में व्यय किया। दुराचारिणी स्त्रियों से संबंध रखा। लोगों को धोखा दिया। मिथ्याभाषण, लूटमार, मद्यपान, निर्दयता आदि सब कुछ किया। कदाचित् ही कोई ऐसा बुरा कर्म हो जो मुझसे बचा हो। इस पर भी मैं दूसरे लोगों की दृष्टि में भद्रपुरुष—सज्जन समझा जाता था। दस वर्ष तक मेरा जीवन इसी प्रकार व्यतीत हुआ। उस समय जो कुछ मैं लेख आदि लिखा करता था, वे भी नाम तथा धन के लिये। ग्रंथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेखक के रूप में भी मैं ऐसे ही मार्ग पर चला। पद तथा धन उपार्जन करने के विचार से मैंने अपने उच्च भावों पर परदा डाल दिया, या उनकी हँसी उड़ाई। प्रशंसा प्राप्त करने के विचार से छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान दिया। फिर भी छब्बीस वर्ष की आयु में, मैं रूस की राजधानी सेंटपीटर्सबर्ग गया, तो वहाँ के प्रसिद्ध लेखकों ने मेरा बड़े जोर-शोर के साथ स्वागत किया और मेरी पुस्तकों की प्रशंसा की।'

झूठा अहंकार—

आगे चलकर टाल्सटाय ने बतलाया है कि इस प्रकार की सफलता के कारण मनुष्य के भीतर किस प्रकार झूठा अहंकार उत्पन्न हो जाता है और किस प्रकार अपने दोषों पर पर्दा डालकर वह अपने मार्ग को युक्तियुक्त समझने लग जाता है ? मनुष्य अपने दोषों को ठीक तरह से समझने की बजाय उलटे-सीधे तर्कों द्वारा अर्थ का अनर्थ करता रहता है और इससे उसके भीतर एक ऐसी अहंवृत्ति बढ़ती रहती है जिसका कोई आधार नहीं होता। अपने लेखन-कार्य से टाल्सटाय को जो प्रशंसा प्राप्त हुई और दूसरे लेखक भी जिस प्रकार के विचारों में ग्रसित रहते हैं, उन सबकी विवेचना करते हुए उन्होंने लिखा है—

"मेरे विचार भी उस समय अन्य मनुष्यों की भाँति हो गये। पवित्रता से जीवन-यापन करने का पुराना उद्देश्य न जाने कहाँ उड़ गया ? अन्य लेखकों की भाँति मैं भी सोचने लगा कि मनुष्य जाति उन्नति कर रही है। उन्नति में सबसे बड़ा भाग लेखकों तथा कवियों का है। हमारा काम संसार को शिक्षा देना है। यदि यह प्रश्न किया जाता है कि स्वयं मेरा ज्ञान कितना विस्तीर्ण है तथा मैं दूसरों को क्या लाभ पहुँचा सकता हूँ, तो अन्य लेखकों के समान मैं भी इसका यही उत्तर देता था कि लेखकों को इस झगड़े में पड़ने की आवश्यकता नहीं। चाहे वह प्रयत्न करें या न करें, उनके विचारों का उत्तम प्रभाव संसार पर पड़ता ही है। लोग मुझे उच्च कोटि का लेखक और कवि मानने लगे थे, इसलिये मैंने भी उपर्युक्त प्रश्न का ठीक उत्तर जानने का प्रयत्न नहीं किया। पर वास्तव में मुझे इस बात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का ज्ञान न था कि मैं किस बात का उपदेश देता हूँ और उसका क्या प्रभाव पड़ेगा ? पर लेखों और पुस्तकों द्वारा मुझे बहुत-सा रुपया मिला, स्वादिष्ट भोजन मिले, सुंदर घर मिला, भोग-विलास के लिये स्त्रियाँ मिलीं, मित्रों की आवभगत करने का अवसर मिला और यश मिला। इसलिये मैंने मान लिया कि मैंने जो उपदेश दिये, वे बहुत अच्छे होंगे।"

"पर ग्रंथ लिखने के दूसरे-तीसरे वर्ष मेरा विश्वास कुछ-कुछ ढीला पड़ने लगा। पहली शंका तो इस कारण हुई कि सब लेखक किसी विषय पर एक मत नहीं होते। कुछ कहते हैं कि हम ही सत्य पर हैं और संसार के शेष लेखक गलती पर हैं। अन्य लेखक समझते हैं कि जो कुछ हैं हम ही हैं। कुछ लेखक ऐसे भी मिले, जिनको अपने लाभ के अतिरिक्त अच्छे-बुरे से कुछ मतलब न था। इसके अतिरिक्त जब मैंने लेखकों के आंतरिक जीवन पर दृष्टि डाली तो मुझे मालूम हुआ कि उनका जीवन बदचलनी का है। इन सब बातों से मुझे मनुष्य जाति तथा अपने आपसे घृणा हो गई। लेखन के संबंध में मैंने अपने विचार बदल दिये, फिर भी इस कार्य से जो सांसारिक लाभ होता था उसे नहीं त्यागा और अन्य लेखकों की तरह मन को यही कहकर समझाता रहा कि हम लोग कितना अधिक लिख या बोल सकें तथा जितनी अधिक रचनायें प्रकाशित कर सकें, उतना ही संसार के लिये हितकर है।"

आत्म निरीक्षण की प्रवृत्ति—

इस प्रकार टाल्सटाय के मन में प्रचलित रीति-रिवाजों की बुराइयों और हानियों के संबंध में बहुत समय तक संघर्ष चलता रहा और वे क्रमशः स्वार्थपरता की नीति से विरक्त होकर किसी नये मार्ग की खोज में लगे रहे। यद्यपि वे एक 'काउंट' थे, जिसकी तुलना हम अपने देश के नवाबों से कर सकते हैं और ऐसे ही लोगों से उनकी मित्रता और नाते-रिश्तेदारी भी थी। पर वे उनकी विलासिता और अपने ही सुख के लिए चिंता करते रहने की मनोवृत्ति को कभी आत्मसात् नहीं कर सके। युवावस्था में अन्य कोई मार्ग ज्ञात न होने से उस तरफ झुके भी तो उनकी आत्मा बराबर उनको कचोटती रही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि यह रास्ता गलत है। वे परीक्षण के तौर पर लगातार एक के बाद दूसरी जीवन प्रणाली को अपनाकर यह देखते रहे कि उससे उनकी आत्मा को शांति मिलती है या नहीं ? उनकी इस अवस्था का वर्णन करते हुए एक विद्वान् ने सत्य ही लिखा है—

"टाल्सटाय आध्यात्मिक जीवन की ओर क्यों मुड़ा ? सुखी जीवन के लिए आवश्यक माने जाने वाले सारे उपकरण उसे बड़े ही आलीशान रूप में प्राप्त हुए थे। शरीर-संपदा भी उसे प्राप्त थी। शारीरिक दृष्टि से शायद अपने समकालीनों में वह सबसे अधिक स्वस्थ था। उसकी बौद्धिकता का क्या कहना ? उसका लोहा विश्व के बुद्धिवादी मानते थे। उसकी कला में अद्‌भुत ताजगी थी। कला और साहित्य के क्षेत्र में उसने विश्व में अपना स्थान बना लिया था। एक बड़ी जमींदारी का वह स्वामी था, इसलिये उसके जीवन में आर्थिक चिंता का कोई प्रश्न ही न था। वह एक कुलीन वंश का व्यक्ति था, इसलिये उसे प्रचुर सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। साथ ही रूसी भाषा का सबसे बड़ा लेखक और विश्व का एक प्रसिद्ध कहानीकार होने का यश उसे प्राप्त था। उसका कौटुंबिक जीवन भरा-पूरा था। उसकी पत्नी थी और कई बच्चे भी थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि अर्थ की दृष्टि से, प्रतिष्ठा की दृष्टि से, कीर्ति की दृष्टि से, कुटुंब की दृष्टि से—सभी दृष्टियों से वह भरपूर था। किसी प्रकार का अभाव उसके जीवन में न था। जीवन से असंतुष्ट होने का कोई बाहरी कारण उसके सामने नहीं था। फिर वह क्यों आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रवृत्त हुआ और धर्म तथा ईश्वर की वास्तविकता को जानने के लिये वर्षों व्याकुल बना रहा ? यह प्रश्न सहज ही हमारे मन में उठ सकता है। व्यक्ति के मन में ऐसा बीज प्रारंभ से ही होता है और अवसर पाकर वह फूट पड़ता है। पचास वर्ष की आयु में जीवन संबंधी अनेक प्रश्नों ने उसके हृदय को मथ डाला और वे भयंकर रूप में उसके सामने खड़े हो गये—

(१) मैं क्यों जी रहा हूँ ? (२) मेरे और अन्य सब लोगों के अस्तित्व का क्या कारण है ? (३) मेरे अस्तित्व और दूसरे अस्तित्वों का क्या प्रयोजन है ? (४) अपने भीतर जो अच्छाई और बुराई का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह विभाजन मैं अनुभव करता हूँ, इसका क्या अर्थ है ? (५) मुझे कैसे जीना चाहिये ? (६) मृत्यु क्या है और उससे मैं अपने को कैसे बचा सकता हूँ ?"

क्या इन प्रश्नों को पढ़कर हमको ढाई हजार वर्ष पहले इसी भारत भूमि पर जन्म लेने वाले गौतम बुद्ध की याद नहीं आती ? वे भी एक स्वाधीन नरेश के पुत्र थे और संपत्ति, विद्या, शक्ति, सौंदर्य किसी बात की उनको कमी न थी। एक परम सुंदरी राजकन्या से उनका विवाह हुआ था और कमल पुष्प के समान सुंदर उनका पुत्र था। फिर भी सामान्य लोगों को दो-चार बार विविध कष्टों से पीड़ित देखकर ही उनके हृदय में यह जिज्ञासा उठ खड़ी हुई कि यह जीवन क्या है, इसमें दुःखों का क्या कारण है और उनका निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है ? इस समस्या ने उनका हृदय इतना अधिक मथ डाला कि उनको राजमहल के सुख असह्य हो गये। वे उसी युवावस्था में युवती पत्नी और पुत्र की ममता त्यागकर वनवासी हो गये और वर्षों तक कष्ट सहन करते हुए इन्हीं प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ते रहे। अंत में उन्होंने एक मार्ग खोज ही लिया और उसके द्वारा अपने लिए ही नहीं और भी करोड़ों व्यक्तियों को सांसारिक दुःखों से पूर्णतः नहीं, तो अंशतः मुक्त करा ही दिया।

हमारे बहुत से पाठक टाल्सटाय के इन प्रश्नों को पढकर कदाचित् कह उठेंगे कि इनमें कौन-सी नवीनता है ? भारतीय धार्मिक साहित्य में तो कदम-कदम पर इस प्रकार की शंकायें और उनके समाधान भरे पड़े हैं। यहाँ तो आज भी सैकड़ों महात्मा अपने प्रवचनों में इन्हीं विषयों का उपदेश अपने श्रोताओं को करते रहते हैं।"

हम मानते हैं कि इस प्रकार की जिज्ञासाओं के समाधान के लिए भारतीय धार्मिक साहित्य में बहुत कुछ मसाला मौजूद है। अध्यात्म-विवेचन की दृष्टि से हमारे उपनिषदों को संसार भर के विद्वानों ने सर्वश्रेष्ठ बतलाया है।" योग वशिष्ठ" आदि में भी इन प्रश्नों का बड़ी सरलतापूर्वक समाधान किया गया है। पर किसी सच्चे सत्यान्वेषी की भूख इतने सहज में ही नहीं मिट जाती। यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक प्रवचनों और धर्मग्रंथों का कुछ समय स्वाध्याय कर लेने से यह उद्देश्य पूरा हो सकता है तो आज हमारे देश में करोड़ों नहीं तो लाखों 'जीवनमुक्त' तो मिल ही सकते थे। पर दुःख से कहना पड़ता है कि हम लोग विदेशों के भौतिकवादी कहे जाने वालों की अपेक्षा भी अधिक माया-मोह, लोभ-लालच से ग्रस्त हैं। हमारे 'महात्मा' और 'पंडित' साधु और 'संन्यासी' हमको संपत्ति और भोग की तृष्णा से क्या छुड़ायेंगे, वे स्वयं गृहस्थों से भी अधिक संपत्ति बटोरने और सुख-साधन एकत्रित करने में लगे रहते हैं। आध्यात्मिक उपदेश देने वाली कथाओं के समाप्त होते ही चढ़ावा और भेंट के लिये थाली घुमाई जाती है और प्रत्येक बड़े मंदिर और तीर्थ में जगह-जगह 'दान-पेटियाँ' रखी रहती हैं। अभी हमने देखा कि एक संन्यासी के आश्रम में चौबीस अवतारों के छोटे-छोटे २४ मंदिर बनाकर प्रत्येक में 'दान-पात्र' का स्थान रख दिया था। इन चौबीस के अतिरिक्त प्रधान मंदिर की मूर्तियों, कार्यालय, विद्यालय आदि सभी स्थानों में और भी बीसियों दान-पात्र रखे दिखाई पड़ते थे। क्या यही आध्यात्मिकता के लक्षण हैं ?

वास्तविक बात यह है कि हम लोग जब ऐसे प्रश्न करते हैं, तो वे केवल ऊपरी सतह तक ही रहते हैं, और उनके जो उत्तर दिये जाते हैं, वे भी रटे-रटाये होते हैं। इस प्रकार के प्रश्नोत्तरी से किसी का जीवन परिवर्तित नहीं हो सकता। ऐसे प्रश्न तो जब हृदय की गहराई से उठते हैं, तभी उनका कुछ प्रतिफल निकलता है। जब ये प्रश्न टाल्सटाय के हृदय में उठे, तो उसकी क्या दशा हो गई ? इसका वर्णन करते हुए टाल्सटाय के जीवन चरित्र लेखक स्टीफेन ज्विग ने जो स्वयं एक जगत् प्रसिद्ध विद्वान् था, लिखा है—

"उसके जीवन की धारा ही रुक गई, जीवन अशुभ हो गया। उसने अपने अंग-अंग को जीवन-रहित अनुभव किया, मानो वह अपने से ही पूछना चाहता हो कि उसे क्या हो गया है ? क्यों एकाएक यह उदासी छा गयी, क्यों यह भय का भूत उस पर हावी हो गया, क्यों कोई चीज उसके मन को नहीं रुचती—उसे प्रभावित नहीं करती। वह केवल यही अनुभव करता था कि काम से उसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन उचट गया है, अपने बच्चे में उसे कोई रस नहीं रह गया है। जीवन की एक घोर ग्लानि उसे दबाये हुए थी और अपनी शिकारी बंदूक को उसने इसलिये ताले में बंद कर दिया था कि कहीं निराशा के आवेग में वह अपनी ओर ही उसे न घुमा दे। उन दिनों उसने पहली बार यह साफ तौर पर अनुभव किया कि स्वयं उसके लिए भी जीवन में सिवाय पीड़ा, मौत और निरंतर श्रम के और कुछ नहीं है। इसीलिये उसने निश्चय किया कि इस तरह वह जिंदा नहीं रह सकता। या तो जीवन का कोई अर्थ, उद्देश्य उसे प्राप्त होना चाहिये; नहीं तो वह अपने को गोली मार लेगा।"

ऐसी हुआ करती है सच्ची आत्माओं को जिज्ञासा। हम जो अपनी प्राचीन कथाओं में सुना करते हैं कि अमुक ऋषि या भक्त ने ईश्वर के दर्शनों की अभिलाषा की और जब सामान्य उपायों से सफलता नहीं मिली, तो वे घोर तप करने को बैठ गये कि जब तक दर्शन न होंगे, तब तक और कुछ करेंगे ही नहीं, चाहे प्राण रहें या जायें। इस प्रकार जब भगवान् को प्राप्त करने के लिए प्राणों की बाजी लगा दी जाती है, तब कहीं जीवन का अर्थ समझ में आता है और ईश्वर सामने आ खड़ा होता है। ऐसी मर मिटने वाली जिज्ञासा आजकल के आश्रमों और मठों के अधीश्वरों 'महात्माओं' में कैसे उत्पन्न हो सकती है, जो गेरुआ वस्त्र धारण करके भी बादाम का हलुआ खाते और मखमली गद्दों पर पड़े रहते हैं।

जीवन की निस्सारता का विवेचन—

टाल्सटाय जन्म से ईसाई, धर्म के अनुयायी थे और उनके घर वालों ने उन्हें उसी का अनुसरण करने की शिक्षा दी थी। पर जब उन्होंने बुद्धि और तर्कपूर्वक जीवन की समस्या की जाँच-पड़ताल करना आरंभ किया तब ईसाई धर्म तो जरा भी न ठहर सका। उसके सिद्धांतों की बुद्धिसंगत तरीके से समीक्षा करने पर यही निष्कर्ष निकला कि—'ईसाई चर्च" (धर्म-मंदिर) निकम्मे, बेईमान तथा मूर्ख लोगों का झुंड है।' यह चर्च सरकार की सहायता से अपना काम चलाता है और बदले में अन्य लोगों पर शासन करने में उसकी सहायता करता है। इस प्रकार के विचार के कारण टाल्सटाय का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राज्य तथा चर्च दोनों से संघर्ष हो गया। सरकार ने तो उनकी रचनाओं पर कड़ी निगरानी रखनी शुरू कर दी और चर्च ने उनको समाज (जाति) से बाहर निकाल दिया। चर्च की पंचायत के आदेश का उत्तर देते हुए टाल्सटाय ने कहा कि "मैंने सबसे पहले चर्च के कट्टरपंथी धर्म को ही सर्वोच्च स्थान दिया था। उसके पश्चात् सामान्य ईसाई धर्म के आदेशों का पालन करने लगा। पर जब इनसे मुझे मानसिक शांति प्राप्त न हो सकी, तो अब मैं सच्चाई को ही सबसे ज्यादा प्यार करने लगा हूँ।" आगे चलकर उनकी क्या दशा हुई इसका वर्णन उन्हीं के शब्दों में सुनिये—

"इस खोज-कार्य में मैं मानसिक ज्ञान रूपी जंगल में गुम हो गया। दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में ज्यों-ज्यों मैं घुसता गया त्यों-त्यों ही अंधकार अधिक मालूम होता गया। अंत में मुझे पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि न यहाँ से बाहर निकलने के लिए कोई रास्ता है और न हो सकता है। जब मैंने धोखा देने वाले ज्ञान के प्रकाश का पीछा किया, तो मुझे मालूम हो गया कि मैं अपने प्रश्न से दूर होता जा रहा हूँ, क्योंकि दर्शनशास्त्र से मुझे वे ही उत्तर मिलते थे, जिन्हें मैं पहले ही जान चुका था। 'मेरे जीवन का क्या अर्थ है ?' 'कुछ नहीं।' 'मेरे जीवन का क्या परिणाम होगा ?" कुछ नहीं।' 'हम सब क्यों जीवित हैं ? मैं क्यों जीवित हूँ ?' क्योंकि हम पैदा हो चुके हैं।"

"विज्ञान के द्वारा मुझे ऐसे बहुत से प्रश्नों का उत्तर मिला, जिनसे मेरा कुछ संबंध न था। जैसे ग्रहों और सूर्य की बनावट, सूर्य और पृथ्वी की गति, मनुष्य तथा प्राणियों की उत्पत्ति आदि, परंतु इस प्रश्न का उत्तर कि जीवन क्या है ? यही था कि तुम असंख्य परमाणुओं के मेल से बने हो। इन परमाणुओं की पारस्परिक गति का नाम ही जीवन है। जब तक ये परमाणु गति करते रहेंगे, तुम जीवित रहोगे। जब इनकी गति रुक जायेगी, तुम्हारे जीवन का अंत हो जायेगा और साथ ही तुम्हारा प्रश्न भी समाप्त हो जायेगा। विज्ञान यही उत्तर दे सकता है, पर इससे मेरा कोई लाभ नहीं, क्योंकि मैं तो जानना चाहता था कि जीवन का क्या अर्थ है ?" विज्ञान की दूसरी शाखा जिसे विचारात्मक (ऐब्सट्रैक्ट) कहा जाता है, वह इस प्रश्न का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सदैव यही उत्तर देती है कि "संसार अनंत तथा अज्ञेय है। मानसिक जीवन भी उसी पूर्ण उद्देश्य का एक अज्ञेय भाग है।"

फिर वे संसार के प्रमुख स्वतंत्र विचारकों के कथनों पर मनन करने लगे। सुकरात ने मरते समय कहा था कि हम जीवन से जितने दूर होते जाते हैं, सत्य के उतने ही निकट पहुँचते जाते हैं। जो सत्य के प्रेमी हैं, वे क्या चाहते हैं ? यही कि शरीर तथा शरीर के कारण होने वाले अन्य पापों से छुटकारा मिले। यदि यह ठीक है तो हम मृत्यु के समय आह्लादित क्यों न हों ?"

जर्मनी के अध्यात्मवेत्ता शापनहार ने कहा है कि "मनुष्य विचार शक्ति (इच्छा) पर निर्भर है। संसार के सारे पदार्थ—छोटे से लेकर बड़े तक मनुष्य के विचार के कारण हैं। अतः जहाँ विचार शक्ति लुप्त होती है, वहाँ संसार लुप्त हो जाता है। किंतु संसार का लुप्त होना मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध है, क्योंकि मनुष्य में जीवित रहने की इच्छा प्राकृतिक है और वह कभी लुप्त नहीं होती। किंतु जिन मनुष्यों ने इच्छा को सर्वथा त्याग दिया है, उनके लिए संसार न होने के समान ही है।" शापनहार ने ही भारतीय उपनिषदों का सबसे पहले अनुवाद करके योरोप में प्रचार किया था, इसलिये उसके विचार भी भारतीय दर्शनों से मिलते-जुलते हैं।

जरूशलम के बादशाह और अपने समय के सर्वोपरि विद्वान् माने जाने वाले सुलेमान ने लिखा है कि "जीवन व्यर्थ है। मनुष्य संसार में जो परिश्रम करता है उसका क्या परिणाम ? एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी आती है। किंतु संसार सदैव वही रहता है। मैंने संसार की सब बातों की वास्तविकता मालूम करने का प्रयत्न किया। उसका परिणाम यह हुआ कि मैं जान गया कि संसार में व्याकुलता और दुःख के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।"

गौतम बुद्ध ने भी यही निर्णय किया है कि "जीवन दुःखमय है और यथाशक्ति इस प्रकार का प्रयत्न किया जाय कि आत्मा शरीर के बंधनों से मुक्त हो जाय तथा मृत्यु के अनंतर भी आत्मा फिर शरीर के बंधन में न पड़े, वरन् जीवन की जड़ ही कट जाय और निर्वाण को प्राप्त कर ले।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन सबका निष्कर्ष निकालते हुए टाल्सटाय ने लिखा है—"विज्ञान और शास्त्रों की खोज करने से मेरी अशांति घटने के स्थान पर बढ़ी, एक ओर विज्ञान से तो मुझे जीवन की समस्या का बिल्कुल उत्तर न मिला और दूसरी ओर शास्त्रों से ऐसा स्पष्ट उत्तर मिला, जिससे सिद्ध हो गया कि जिस परिणाम पर मैं पहुँचा हूँ, उसी पर संसार के अनेक मेधावी मनुष्य भी पहुँचे हैं।"

वास्तव में टाल्सटाय उस समय भारतीय शास्त्रों के 'दुःखवाद' के सिद्धांत को मान रहे थे। हमारे देश के अनेक मनीषियों ने संसार को दुःखमय कहा है, क्योंकि इसका रूप जन्म और मृत्यु का जोड़ा है, जो दोनों ही दुःखमयी हैं। बीच के समय में मनुष्य धन, स्त्री, परिवार के संपर्क में जो सुख समझता है, वह प्रायः उसका भ्रम है। प्रत्येक भारतीय ऋषि ने इसे एक प्रकार की छलना अथवा माया कहा है, जो मनुष्य को कभी सच्चा सुख नहीं दे सकती।

टाल्सटाय ने भी उस समय भारतीय दृष्टिकोण को ही ज्यादा सही समझा। उसने लिखा कि—"एक मनुष्य वे हैं जो 'एपीक्यूरियन' सिद्धांतानुसार जीवन व्यतीत करते हैं। इसका आशय यह कि प्रत्येक ऐसी बात की ओर जिसमें उन्हें आनंद अनुभव होता है, आकर्षित हो जाते हैं तथा दुःखप्रद चीजों से बचते हैं। सुलेमान ने लिखा कि—"कभी मेरा भी यही विचार था कि जीवन व्यतीत करने की इससे अच्छी दूसरी रीति नहीं है। अतएव मैं यही कहा करता था कि संसार में खाने, पीने तथा आनंद से रहने के सिवाय और कोई बात नहीं है।" इसी को हम भौतिकवादी दृष्टिकोण कहते हैं। पर इस विचारधारा के लोग इस बात को भूल जाते हैं कि सब लोग सुलेमान नहीं हो सकते। जहाँ कुछ लोगों के पास संपत्ति, भवन और स्त्रियाँ हैं, वहाँ बहुसंख्यक ऐसे भी हैं, जिनको इनमें से एक भी ठीक तौर से प्राप्त नहीं है। इन दोनों प्रकार के मनुष्यों की मानसिक अयोग्यता इनका ध्यान उन बातों की तरफ नहीं जाने देती, जिनको देखकर गौतम बुद्ध की शांति जाती रही थी। वे नहीं सोचते कि रोग, वृद्धावस्था तथा मृत्यु के कारण यदि 'आज' नहीं तो कल उनके सारे सुखों का अंत हो जायेगा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"हमारी बुद्धि ने तो कभी हमको यह विश्वास नहीं दिलाया कि जीवन की कोई आवश्यकता है, पर फिर भी करोड़ों मनुष्य जीवित रहते हैं और समझते हैं कि जीवन में कुछ सार है। इसमें संदेह नहीं कि संसार के आरंभ से अब तक मनुष्यों ने जीवन-समस्या के विषय में भिन्न-भिन्न विचार स्थित किये हैं और इसी तरह से वे अब तक रहते चले जाते हैं। मैं अपने चारों ओर जो कुछ देखता हूँ, वह मेरे पूर्ववर्ती मनुष्यों के ज्ञान तथा खोज का परिणाम है। मेरी मानसिक शक्ति और विचारशक्ति भी मेरे पूर्ववर्ती मनुष्यों की देन है। किंतु फिर भी मैंने यह प्रमाणित कर दिया कि मेरे पूर्ववर्ती मनुष्यों का जीवन बिल्कुल निरर्थक था। मुझे ध्यान आया कि अवश्य मेरे समझने में कहीं न कहीं भूल है। पर निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि भूल किस स्थान पर हुई है ?"

जीवन का अर्थ कर्तव्यपालन है—

वास्तविक बात यह थी कि उस समय टाल्सटाय इस जीवन-समस्या पर अपनी श्रेणी के शिक्षित, धनवान् तथा आलसी लोगों के दृष्टिकोण से विचार करते थे। बड़े लोगों की तरह उनको भी आरंभ में यह अनुभव नहीं होता था कि संसार में और भी असंख्यों मनुष्य रहते हैं, जो अभाव की दशा में भी बिना इन समस्याओं में पड़े आसानी से जीवन व्यतीत कर लेते हैं। ये लोग कभी यह शिकायत नहीं करते कि 'जीवन-समस्या' उनकी समझ में नहीं आती। न वे उन लोगों में से होते हैं, जिन्हें भोग-विलास के अतिरिक्त और कोई चीज अच्छी नहीं लगती। उनको जीवन में प्रायः संकट और कष्ट सहन करने ही पड़ते हैं। इन लोगों के जीवन का अध्ययन करने से टाल्सटाय की शंकायें किस प्रकार मिट गईं ? इसका उत्तर भी सुन लीजिये—

"मैं अब अधिकतर निर्धनों, साधारण मनुष्यों, किसानों, यात्रियों तथा साधुओं की संगति में रहने लगा। यद्यपि ये लोग भी उसी ईसाई धर्म पर विश्वास रखते थे, जिसका उपदेश धर्माचार्य (पादरी) दिया करते थे। इन लोगों के विश्वासों में भी सत्य और असत्य दोनों प्रकार की बातें मिली थीं। पर दोनों में भेद यह था कि जहाँ धर्माचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहते कुछ थे और करते कुछ थे, वहाँ ये लोग जो कहते थे, वही करते थे। ज्यों-ज्यों इनसे मेरा परिचय बढ़ता गया, मुझे भरोसा होता जाता था कि वास्तव में इनका विश्वास ठीक है और उन्होंने जीवन समस्या को हल कर लिया है। मेरी श्रेणी के अर्थात् 'बड़े' कहलाने वाले लोगों में शायद हजारों में से एक व्यक्ति ऐसा मिल सकता है, जो धर्महीन न हो। इसके विपरीत इन निर्धन तथा मेहनती लोगों में एक भी 'काफिर' नहीं मिल सकता। अपनी श्रेणी के लोगों को मैंने कष्ट और आपदाओं के कारण विकल होते देखा। इसके विपरीत उन लोगों को रोगों तथा शोकों को इस विश्वास के साथ झेलते देखा कि जो कुछ हो रहा है—ईश्वर हमारे भले के लिए ही करता है। मैंने बहुत ध्यान से देखा और अनेक देशों के मेहनतपेशा लोगों के जीव्रन पर गहरी दृष्टि डाली, तो मुझे निश्चय हो गया कि उनमें दस-बीस नहीं, वरन् सहस्रों तथा करोड़ों मनुष्यों ने जीवन समस्या को इसी तरह समझ लिया है कि उन्हें जन्म तथा मृत्यु का भय ही नहीं लगता। यद्यपि वे मानसिक शक्तियों, शिक्षा, आचार-व्यवहार की दृष्टि से बिल्कुल साधारण ही होते हैं, पर जीवन की वास्तविकता को वे इतना समझ चुके हैं कि विपरीत सांसारिक घटनायें उन्हें बहुत कम प्रभावित कर सकती हैं।"

इस प्रकार टाल्सटाय को विदित हो गया कि 'जीवन-समस्या बड़ी जटिल है—यह बात उन्हीं लोगों ने फैलाई है, जो स्वयं काम न करके दूसरों की कमाई तथा सेवा पर जीते हैं। उनके दुःखों तथा परेशानियों का और अनेक बार आत्म-हत्या तक कर लेने का कारण यही है कि वे अपना कर्तव्यपालन नहीं करते और इस प्रकार निकम्मा जीवन जीना अपना अधिकार और बड़प्पन मानते हैं। ऐसे ही लोगों के लिए धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि—"वे अंधकार को प्रकाश से अच्छा समझते हैं, क्योंकि उनके कर्म दूषित हैं।" बुरा आदमी स्वभावतः प्रकाश को नापसंद करेगा, जिससे उसके कर्म प्रकट न हों। मनुष्य का धर्म परिश्रम करना है और केवल अपने लिए ही नहीं, वरन् समाज के लिए भी। अगर केवल अपना ही पेट भरेगा तो **'केवलाघो भवति केवलादी'** की वैदिक सूक्ति के अनुसार पापी बन जायेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर ही सत्य है—

इस प्रकार टाल्सटाय ने वर्षों ठोकरें खाकर और अपनी दशा पागलों जैसी बनाकर अंत में यह समझा कि इस संसार का जीवन किसी की इच्छा के अनुसार चल रहा है। अब वे यह अनुभव करने लगे कि मैं किसी के अधीन हूँ। इस विचार के आने से उनको अपना जीवन सुगम जान पड़ने लगता। पर उन्होंने वर्षों तक कांट, शापनहार आदि दार्शनिकों की जो दलीलें पढ़ी थीं, वे बीच में सर उठाकर इस वातावरण को फिर से क्षुब्ध कर देती थीं। इन दार्शनिकों का मत था कि ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित नहीं हो सकता। टाल्सटाय बार-बार इस सिद्धांत के पक्ष और विपक्ष में युक्तियाँ ढूँढ़कर विचार सागर में डूबते-उतराते रहते थे। वे स्वयं लिखते हैं—

"मेरे विचारों में इस प्रकार के परिवर्तन एक या दो बार ही नहीं हुए, वरन् सैकड़ों बार कभी मैं हर्ष या आवेग का शिकार बन जाता और कभी निराशा का। एक बार मैंने अपने दिल में कहा कि यह अच्छी बात है कि ईश्वर नहीं है। बल्कि यह कहना चाहिये कि मेरे विचारों के अतिरिक्त ईश्वर कोई पदार्थ नहीं है। कोई पदार्थ या चमत्कार यह सिद्ध करके नहीं दिखा सकता कि ईश्वर नहीं है। पर उसके बाद ही मैं अपने मन में कहने लगता कि यदि ईश्वर नहीं है, तो उसकी खोज करने का विचार मेरे दिल में बार-बार कहाँ से आता है ? मैं देख रहा हूँ कि जब मैंने ईश्वर का विचार किया, तब ही जीवन मुझे प्रिय मालूम हुआ और जब मैंने उसको भुलाया तो मानो मौत आ गई। जिस समय मैं ईश्वर के अस्तित्व पर से विश्वास उठा लेता हूँ, तो अपने को मरा हुआ ही अनुभव करने लगता हूँ। यदि ईश्वर के पा सकने की आशा की एक झलक मेरे अंदर न होती तो मैंने कभी की आत्म-हत्या कर ली होती। वास्तविकता यह है कि जब तक मैं उसकी खोज में रहता हूँ, जीवित रहता हूँ। 'अब और किसकी खोज है ?' मेरे अंदर से आवाज आई कि जिस चीज के बिना जीवन नहीं रह सकता, वही ईश्वर है। ईश्वर को जानना और जीवित रहना एक ही बात है। ईश्वर ही जीवन है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"ईश्वर की खोज में जीवन व्यतीत करो, क्योंकि ईश्वर के बिना जीवन ही कहाँ है ?' जब यह विचार मेरे भीतर दृढ़ हो गया, तो मुझको एक शक्ति और प्रकाश ने घेर लिया और वे अंत समय तक मेरे साथ रहे। मुझमें यह परिवर्तन कब और कैसे हुआ, यह मैं कह नहीं सकता। जिस प्रकार धीरे-धीरे निराशा बढ़ी थी और सदा आत्म-हत्या का विचार बना रहता था, उसी प्रकार धीरे-धीरे मुझमें प्रकाश तथा शक्ति कहीं से आ गई।"

पाठक टाल्सटाय के इस विचार-मंथन और ईश्वर प्राप्ति के लिये सच्ची 'तपस्या' पर विचार करें और फिर अपने यहाँ के उन ईश्वर भक्तों के संबंध में सोचें, जो बड़े-बड़े तिलक लगाकर, मोटी-सी माला पहनकर मंदिर में जाकर घंटा बजाते हुए 'हर हर महादेव' अथवा 'कृष्ण भगवान् की जय' चिल्ला उठते हैं, पर तरह-तरह के कुकर्म करते हुए कभी यह शंका नहीं करते कि सर्वव्यापी भगवान् शिव या कृष्ण मुझे देख रहे होंगे, मैं ऐसा खोटा काम कैसे करूँ ? टाल्सटाय ने तो जब से एक, शब्दों से परे, सूक्ष्मातिसूक्ष्म शक्ति पर विश्वास किया, तब से उसके जीवन की कायापलट हो गई। उसने जिस-जिस बात को दूषित तथा अपने और दूसरों के लिये अहितकर समझा, उसे तुरंत छोड़ दिया। अपनी लाखों रुपये की जमींदारी की आमदनी में से घर वालों के विरोध का सामना करते हुए अधिक से अधिक जितना संभव था उतना निर्धनों को दे डाला। वह तो पूरी जागीर ही किसानों को देने को बिल्कुल तैयार था, पर उसकी स्त्री ने बच्चों की तरफ से उसके खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने का निश्चय कर लिया, तो रुकना पड़ा।

फिर भी उसने स्वयं जमींदारी की कमाई में से एक पैसा भी लेना बंद कर दिया और अपना खर्च जूता बनाकर चलाते थे। यों उसकी लिखी पुस्तकों से मिलने वाली रायल्टी की आमदनी भी काफी थी, पर वह बौद्धिक कार्य की कमाई को भी प्रशंसनीय नहीं समझता था। उसका तो कहना था कि भगवान् का आदेश है कि मनुष्य अपने-पसीने की कमाई ही खाये। इसलिये यदि हम अपने सिद्धांतों के अनुसार ही जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, तो हमको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उचित है कि जिस प्रकार सामान्य किसान मजदूर मेहनत करके पेट भरते हैं, वैसा ही करें। इसके लिए वह अपने खेतों में भी फसल के समय स्वयं काम करता था और उसकी प्रेरणा से उसकी स्त्री और पुत्रियाँ भी काफी सहयोग देती थीं। फिर भी जब उसे रईसी परिवार और आलीशान महल आदि से बहुत अधिक विरक्तता हो गई और घर वाले उसके त्याग और दान के कार्यों में अडंगा लगाते ही रहे, तो वह एक संन्यासी की भाँति सब कुछ छोड़कर और केवल एक बिस्तर अपनी पीठ पर लादकर घर से निकल पड़ा। पर उस मौसम के कठोर शीत को सहन कर सकना उनकी शारीरिक शक्ति से बाहर था। इसलिये दूसरे ही दिन उनको निमोनिया हो गया और एक छोटे रेलवे-स्टेशन पर ही उनकी मृत्यु हो गई। इस समाचार के फैलते ही संसार भर के साहित्यिक क्षेत्रों में न जाने कितना कुहराम मचा और अनगिनत शोक और सहानुभूति के पत्र उनके घर पर भेजे गये। पर टाल्सटाय को संतोष था कि मरते समय भी वे ईश्वरीय आदेश का पालन करते हुए ही संसार से विदा हुए।

ईश्वरीय खोज के फलस्वरूप साहित्य क्षेत्र से हट जाने के कारण अन्य कितने ही साहित्यिक उनको उलाहना दिया करते थे। रूस के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार तुगनेव को उनके 'ईश्वर' से यही शिकायत थी कि टाल्सटाय साहित्य से हटकर व्यर्थ ही अपने को एक 'धार्मिक नैतिकता' में खोये दे रहे हैं। रूस के महान् लेखक मैक्सिम गोर्की ने भी जिसने देश-सेवा के लिए सर्वस्व निछावर कर दिया था और कारागार की यंत्रणायें सहन की थीं, ऐसी ही सम्मति प्रकट की थी। एक बार टाल्सटाय ने गोर्की से कहा—"तुममें सब ईश्वरीय गुण मौजूद हैं, परंतु तुम ईश्वर में विश्वास क्यों नहीं करते ?" गोर्की ने उत्तर दिया—"मैं मनुष्य को छोड़कर किसी अदृश्य ईश्वर पर विश्वास नहीं कर सकता। यदि मैं किसी में विश्वास कर सकता हूँ, तो तुममें कर सकता हूँ। तुम्हीं को मैं ईश्वर मान सकता हूँ।" इसमें संदेह नहीं कि इन दोनों ही महापुरुषों को दैवी प्रकाश प्राप्त हुआ था, जिसका उपयोग उन्होंने पूर्ण रूप से मानवता की सेवा के लिए किया। पर एक उसे ईश्वर की कृपा मानता था और दूसरा अपना कर्तव्य समझकर ही कर रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टाल्सटाय और महात्मा गांधी—

पर हम भारतवासियों की दृष्टि में टाल्सटाय का महत्त्व सबसे अधिक इसलिये है कि महात्मा गांधी ने उनको अपना गुरु माना था और अफ्रीका तथा भारत में टाल्सटाय के सिद्धांतों से प्रेरित होकर सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन चलाये थे। गांधी जी सन् १९०६ से भी पहले टाल्सटाय से पत्र व्यवहार करने लगे थे और उसी समय उन्होंने फीनिक्स (दक्षिण अफ्रीका) में "टाल्सटाय फार्म" स्थापित किया था, जिसका उद्देश्य गरीबों तथा आंदोलन के कारण विपत्ति में फसे भारतीयों की सहायता करना था। टाल्सटाय भी महात्मा गांधी को बहुत मानते थे। उनके अंतिम समय में भी जो पुस्तकें अध्ययन के लिए उनकी मेज पर रखी थीं, उनमें मि० डोक की लिखी "एम० के० गांधी—एन इंडियन पेट्रियट इन साउथ अफ्रीका" (एम० के० गांधी दक्षिण अफ्रीका में एक भारतीय देश भक्त) नाम की पुस्तक भी थी। इन दोनों महापुरुषों की तुलना करते हुए एक स्थान पर कहा गया है—

"गांधी और टाल्सटाय की जीवन-प्रणाली में जितनी समता है, उतनी अन्यत्र मिलनी कठिन है। इन दोनों महापुरुषों की कथनी और करनी में बिल्कुल अंतर न होता था। सादगी के इनकी अपेक्षा श्रेष्ठ उदाहरण ढूँढ़ने से भी न मिलेंगे। गांधी जी अपने हाथ का काता सूत पहनते थे और टाल्सटाय अपने हाथ से तैयार किया हुआ जूता काम में लाते थे। टाल्सटाय आत्म निर्भरता और सादगी में गांधी जी से भी कुछ आगे ही थे। वे अपने हाथ से भोजन बनाकर खाते थे और यात्रा में अपने सामान का गट्ठर अपनी पीठ पर लाद लेते थे। इन दोनों ही आधुनिक संतों का जीवन—त्याग और बलिदान से युक्त था। टाल्सटाय असहयोग सिद्धांत के जन्मदाता थे। उन्होंने इस अस्त्र का प्रयोग सबसे पहले रूस के किसानों को सिखाया था। रूस के किसानों और गुलामों का शोषण देखकर टाल्सटाय की आँखें भर आती थीं। उन्होंने कहा कि शक्तिशाली प्रशासन से लोहा तो नहीं लिया जा सकता, पर सामूहिक असहयोग द्वारा प्रशासन को परास्त करके पीड़ित जनता को छुटकारा दिलाया जा सकता है। गांधी जी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने इस सिद्धांत को व्यापक रूप दिया और शक्तिशाली अंग्रेज सरकार के विरुद्ध इसका प्रयोग करके सफलता प्राप्त की।

गांधी जी अपरिग्रह के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने इस सिद्धांत का जीवन में पूरी तरह पालन किया था। वे केवल लगोंटी लगाकर रहा करते थे। सार्वजनिक प्रयोग की वस्तुओं को अधिक रखने वाले को उन्होंने चोर कहा था। टाल्सटाय भी कहते थे कि जिसके पास दो कोट हों, तो उसे एक कोट उस व्यक्ति को दे देना चाहिये, जिसके पास नहीं है। वे समाज की सब बुराइयों का मूल रुपये को ही मानते थे। प्रायः सभी अपराध आर्थिक विषमता के कारण होते हैं। वह स्वयं किसान, मजदूरों के साथ रहते और अनेक प्रकार से उनकी सेवा सहायता के लिये प्रयत्न करते। गांधी जी भी हरिजन बस्तियों में आग्रहपूर्वक रहते थे और नीचे गिरे हुओं को उठाने में ही जीवन की सार्थकता मानते थे। इस प्रकार ये दोनों ही मानव-सेवा के व्रतधारी थे, जिसका पालन उन्होंने जीवन के अंतिम समय तक किया। आज भी लाखों मनुष्य उनसे प्रेरणा लेकर इस पुण्य कार्य में यथाशक्ति संलग्न हैं। इसी से ऐसे महापुरुष मानवता के मार्गदर्शक कहे जाते हैं।

भारत और भारतीय साहित्य से प्रेम—

टाल्सटाय की यह भी एक विशेषता थी कि भारत से इतनी दूर रहते हुए और भारतीय भाषाओं से अनभिज्ञ रहते हुए भी वे इसके साथ पूरी सहानुभूति रखते थे। उनके निवास स्थान "यास्ताया पोल्याना" में उनका जो पुस्तकालय यादगार के रूप में ज्यों का त्यों मौजूद है, उसका निरीक्षण करने से विदित होता है कि टाल्सटाय हृदय से भारतीय संस्कृति के प्रेमी थे और भारतीय भी उनको बड़े प्रेम तथा श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। सन् १९५५ में भारतीय राज्य परिषद् के उपाध्यक्ष कृष्णमूर्ति राव ने इस पुस्तकालय का दर्शन करने के पश्चात् कहा कि "टाल्सटाय ने महात्मा गांधी को प्रभावित किया और गांधी जी उपनिवेशवादी अंग्रेजों से भारत को मुक्ति दिलाई। इस दृष्टि से टाल्सटाय ने भी भारत को स्वतंत्र कराने में सहयोग दिया। अतएव **"यास्ताया पोल्याना"** और टाल्सटाय की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाधि हमारे लिए भी पवित्र वस्तुयें हैं।'' टाल्सटाय भारत संबंधी साहित्य का अनुशीलन कितनी तल्लीनता से करते थे, यह एक रूसी विद्वान् बी० बुल्गानोव के निम्न लेखांश से विदित होता है—

"भारत संबंधी पुस्तकों के अतिरिक्त टाल्सटाय के पुस्तकालय में बहुत बड़ी संख्या में भारतीय पत्रिकायें भी हैं, जो १६०२ से १६१० के बीच भारत में और विदेशों में अंग्रेजी में प्रकाशित हुई थीं। कुछ पत्रिकायें तो अत्यंत दुर्लभ हैं। ये मुख्यतः भारत के स्वाधीनता आंदोलन से संबंध रखती हैं। स्वाधीनता आंदोलन के कर्णधारों का यह विश्वास उचित ही था कि यह महान् मानवतावादी विद्वान् भारतीय जनता के कष्टों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करेगा और उनकी न्यायपूर्ण माँगों का समर्थन करेगा। टाल्सटाय भी इन सब पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का पूर्णतया अध्ययन करते थे। विभिन्न पुस्तकों के अंदर कोनों पर उनकी लिखी टिप्पणियाँ मौजूद हैं, जिनसे प्रमाणित होता है कि वह उन्हें कितने ध्यानपूर्वक पढ़ते थे। वे भारतीय महाकाव्यों, भारतीय महापुरुषों के दार्शनिक विचारों, भारत के धर्म-ग्रंथों में काफी दिलचस्पी लेते थे। उनके पुस्तकालय में वाल्मीकीय रामायण का फ्रेंच अनुवाद भी मौजूद है, जिस पर उन्होंने कई जगह टिप्पणियाँ लिख रखी हैं।

बौद्ध धर्म के सिद्धांतों की तरफ झुकाव—

उनको बौद्ध धर्म में विशेष दिलचस्पी थी और उसके प्रति उनका रूख आदर और सम्मान का था। वह बौद्ध धर्म के उद्भव को मूल स्रोतों से अध्ययन करते थे। उनके पुस्तकालयों में भारतीय, जर्मन और फ्रेंच लेखकों की बौद्ध धर्म के बारे में बहुत-सी पुस्तकें हैं। पुस्तकों में लगाये गये निशानों से विदित होता है कि उनके कुछ हिस्से उनको बहुत अधिक पसंद आये थे। अन्य स्थानों में प्रश्नवाचक चिह्न भी लगाया गया है, जिससे स्पष्ट जान पड़ता है उन बातों में वे लेखक से सहमत नहीं थे। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् ओल्डनवर्ग लिखित "बुद्ध, उनका जीवन सिद्धांत और आदेश" नामक ग्रंथ को पढ़कर वे बहुत प्रसन्न हुये थे, यह बात उन्होंने अपनी ५ मई १६०७ की डायरी में लिखी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राच्य विद्या विशारद मैक्समूलर की "धर्मों के इतिहास का अनुभव" और "भारतीय धर्मों के प्रकाश में धर्मों का उद्भव और विकास" नाम की पुस्तकें भी उन्होंने पढ़ी। इनमें उन्होंने जगह-जगह कोनों में भारतीय धर्मों और बौद्ध धर्म से संबंधित बहुत-सी टिप्पणियाँ लिखी हैं।

पुस्तकालय में प्रो० रामदेव (गुरुकुल काँगड़ी) द्वारा संपादित "वैदिक मैगजीन" के भी बहुत से अंक हैं। यह उनको बहुत पसंद आई थी और उन्होंने प्रो० रामदेव से कहा था कि वे वैदिक धर्म की खास-खास और अत्यंत प्रभावजनक सूक्तियों का संग्रह करें। उन्हें वे अपने उस ग्रंथमाला में सम्मिलित करने वाले थे, जिसमें विश्व के बड़े-बड़े धर्मों का वर्णन किया जाता था।

स्वामी विवेकानंद की पुस्तकें जो जर्मन भाषा में प्रकाशित की गई थी, उनको पसंद आई थी। "परमानंद का मार्ग" की पुस्तिका पर उन्होंने लिख रखा है—"बहुत अच्छी।" वे इसका रूसी भाषा में अनुवाद करना चाहते थे। स्वामी विवेकानंद के विचारों से वे बड़े प्रभावित होते थे। 'ब्रह्म और जीव" नामक निबंध पढ़कर उन्होंने ४ जुलाई १९०८ को अपनी डायरी में लिखा—"विवेकानंद का ब्रह्म पर लिखा अद्भुत निबंध पढ़ा। इसका अनुवाद रूसी भाषा में होना चाहिये। यह कार्य मैं स्वयं करने का विचार रखता हूँ।"

ईसाई धर्म के सिद्धांतों में उन्हें बहुत-सी त्रुटियाँ दिखाई पड़ती थी और अंत में उन्होंने उसे त्याग ही दिया। पर भारतीय धर्म की अनेक बातें उनको बहुत महत्त्वपूर्ण जान पड़ती थी। उनमें ईश्वर जीव, पुनर्जन्म आदि विषय में उनको ऐसे ठोस तथ्य मिलते थे, जिनसे उनकी अनेक शंकाओं का समाधान हो जाता था अथवा नवीन विचार उत्पन्न होते थे। टाल्सटाय ने अनुभव किया कि भारतीय धर्म ग्रंथों में शाश्वत सत्य का दर्शन करने की प्रेरणा दी गई है और भगवान् के नाम पर मनमानी बातें बक देने के बजाय उनका गंभीरतापूर्वक विवेचन किया गया है। यह ठीक है कि धर्म का व्यवसाय करने वालों ने उनमें यहाँ भी खूब मिलावट की है और अर्थ का अनर्थ कर दिया है। खासकर विभिन्न संप्रदायों के पृष्ठपोषकों ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी व्याख्या खूब खींच-तानकर अपने मतानुसार की है। पर टाल्सटाय स्वयं अद्वितीय प्रतिभाशाली थे और वे शीघ्र ही सच्चाई और झुठाई का विश्लेषण करके **संत हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि-विकार** की उक्ति के अनुसार सारमय को ग्रहण कर लेते थे।

कुछ वर्ष पूर्व विदेश से दिल्ली आये एक कविता समीक्षाकार विद्वान् ने भारतीय साहित्यिकों से बात करते हुए कहा था—"टाल्सटाय की आत्मानुभूति लगभग भारतीय भाव-धारा से मिलती-जुलती ही है। हमने जहाँ तक उनको समझा है, हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं।" एक अन्य फ्रांसीसी लेखक ने कहा था कि "रूस के सुप्रसिद्ध कथाकार डोस्टोविस्की की रचनाओं को पढ़ते हुए मैं एक ऐसे लोक में पहुँच जाता हूँ, जहाँ सब अद्‌भुत हैं और मैं किसी का साथी या पड़ोसी नहीं बन सकता। उनके प्रति और सब श्रेष्ठ भाव उत्पन्न होते हैं, केवल एक 'विश्वास' का भाव नहीं जागता। पर टाल्सटाय का हर चित्र और हर चरित्र एकदम विश्वसनीय है। कहीं हमको नहीं लगता कि क्या ऐसा हो भी सकता है ? मानो हर जगह हमारा हृदय जाता है, अनुभव साथ-साथ रहता है और हर क्षण यही विदित होता है—यह सत्य यह है।"

सुप्रसिद्ध भारतीय कलाकार स्वर्गीय अमृत शेरगिल के पिता सरदार उमराव सिंह शेरगिल भी अपनी युवावस्था से टाल्सटाय के भक्त थे और उनसे पत्र-व्यवहार किया करते थे। उन्होंने बतलाया कि एक बार अपने पत्र में टाल्सटाय ने लिखा था—"मुझे ऐसा आभास हुआ करता है कि भारतीय आत्मा और रूसी आत्मा में नैसर्गिक संबंध और प्रेम है। पंजाबी किसान और रूसी किसान में मुझे बड़ी समानता प्रतीत होती है। पंजाबी और रूसी किसान देखने-सुनने में, तौर-तरीके में, रीति-रिवाज में, खान-पान में भी बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं।"

और भी कितने ही लेखों में मालूम पड़ता है कि टाल्सटाय को भारत के प्रति काफी आकर्षण था और भारतवासियों को भी वे अपने देश के प्राचीन ऋषियों अथवा संतों की ही तरह जान पड़ते थे। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में वे भारतवर्ष आकर यहाँ की संस्कृति और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निवासियों की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने की इच्छा करने लगे थे। पर मार्ग की कठिनाइयों और आवागमन संबंधी बाधाओं के कारण उनकी यह अभिलाषा पूर्ण न हो सकी।

सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप में परिणत करना—

मनुष्य की परीक्षा वास्तव में इससे होती है कि वह जो कुछ कहता है उसके अनुसार आचरण भी करता है या नहीं ? टाल्सटाय ने ईसाई धर्म को इसीलिये छोड़ा था कि उसके धर्माचार्य मुख से तो बड़ी-बड़ी बातें, प्रेम और क्षमा के सिद्धांतों की घोषणा करते थे, पर उनका वास्तविक रहन-सहन उसके विपरीत होता था। इसके बजाय टाल्सटाय का मत सदैव यही रहा कि जिस बात को हम श्रेष्ठ मानते हैं, दूसरों को जिसकी प्रेरणा देते हैं, उसका पालन स्वयं अवश्य करना चाहिये। इसी बात के अभाव के कारण जीवन उनको भार स्वरूप जान पड़ने लगा और वे आत्महत्या को तैयार हो गये। अंत में जब उन्होंने रईसों का ठाठ-बाठ युक्त जीवन त्यागकर गरीब किसान मजदूरों का जीवन अपना लिया तभी जाकर उनको शांति मिल सकी। वे स्वयं अपने अनुयायियों के साथ किस प्रकार कृषि कार्य करते थे, इसका वर्णन करते हुए एक लेखक ने टाल्सटाय की जीवन-झाँकी में बतलाया है—

"उन्होंने विलासिता का जीवन बिल्कुल त्याग दिया। अपनी विशाल संपत्ति को उन्होंने परिवार के लोगों में विभाजित कर दिया और स्वयं एक कुटिया में रहकर मजदूर की तरह जूते बनाकर अपना निर्वाह करने लगे। उन्होंने शिकार करना, मांस खाना, सिगरेट या तंबाकू पीना बिल्कुल त्याग दिया। आरंभ में कुछ दिन रूस की सामाजिक प्रथानुसार वे थोड़ी मात्रा में मदिरा सेवन करते रहे, पर बाद में वह भी बिल्कुल छोड़ दी और पूर्ण सात्त्विक, निरामिष भोजन करने लगे। सामाजिक क्षेत्र में इसका जादू का-सा प्रभाव हुआ। काउंट, राजकुमार (प्रिंस), उच्चवंशीय धनी मानी, कॉलेजों के अध्यापक आदि उनके चारों ओर एकत्रित होने लगे। फावड़े और कुदालियाँ हाथों में लिए वे सब खेती के कार्य में रस और आनंद लेने लगे। किसान तो इस कार्य में सम्मिलित थे ही। टाल्सटाय की पत्नी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काउंटेस सोफी आंद्रीबना देहाती पोशाक पहने तथा अन्य बालक और महिलायें सभी फसल काटने और घास इकट्ठी करने में हाथ बँटाते। चिलचिलाती धूप में टाल्सटाय किसानों के से कमीज और पाजामा पहिने घास काटने और उसकी सुव्यवस्था करने में संलग्न दिखाई पड़ते।"

"सन् १८८५ की बात है कि टाल्सटाय अपनी लाड़ली पुत्री माशा और बाहर से आयी हुई दो अन्य महिलाओं के साथ खेती के काम में लगे थे और भी कई व्यक्ति साथ में काम कर रहे थे। वे सब ताजा कटी हुई महकदार घास के ढेर लाकर डाल रहे थे और टाल्सटाय उसे एक भूसा खींचने के काँटे से उठाकर गोलाकार कुएँ की शकल में सजाते जाते थे, जिससे वह सुरक्षित रखी रहे। अंतिम ढेर को वृत्ताकार जमा कर रोंदते हुए उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से पुकार कर कहा—"मैं तुम लोगों से आगे निकल गया, तुम क्या कर रहे हो ?"

उस समय सूर्य के छिपने में थोड़ी देर थी, इसलिए सब लोग अंतिम "कोपना" बनाने में जुट गये।

"हमें शीघ्रता करनी चाहिये"—टाल्सटाय ने बढ़ावा देते हुए कहा। "सूर्यास्त के बाद मनुष्य काम नहीं करता—बुजुर्गों के जमाने से यही कहावत चली आ रही है।"

ऐसा था टाल्सटाय का प्राकृतिक और पापरहित जीवन। उन्होंने बड़े स्पष्ट रूप में कहा था कि बौद्धिक कार्य करने वालों को भी प्रतिदिन नियम से खेती, कारीगरी आदि का कुछ उपयोगी शारीरिक श्रम अवश्य करना चाहिये। इससे एक ओर जहाँ हम इस ईश्वरीय आदेश का पालन कर सकेंगे कि "मनुष्य को अपने पसीने की रोटी खानी चाहिये।" वहाँ इस प्रकार का श्रम हमारे स्वास्थ्य और मानसिक प्रसन्नता की रक्षा करने वाला भी होगा। उन्होंने स्वयं इसी सिद्धांत के अनुसार जीवन-यापन किया और उनकी प्रेरणा से और भी अधिक बड़े विद्वानों तथा उच्च पदवीधारियों ने इसका अनुकरण किया। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में फीनिक्स स्थित "टाल्सटाय फार्म" इसी आदर्श पर स्थापित किया था और उसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कितने ही सुशिक्षित भारतीय और कई योरोपियन भी कृषि संबंधी तथा अन्य शारीरिक श्रम के कार्य करते थे। भारतवर्ष आकर भी उन्होंने यही उपदेश दिया था कि उनके सत्याग्रह आश्रम में सब लोग अपना कार्य अपने हाथों से ही करें। पर यहाँ खादी और चर्खे की प्रवृत्ति आरंभ हो जाने के कारण कृषि कार्य के प्रयोग करने का अवसर नहीं आ सका। तो भी इसकी सच्चाई को उनके अनुयायी अभी तक स्वीकार करते हैं और एक बार विनोबा भावे ने स्व० जवाहर लाल नेहरू को लिखा था कि "यद्यपि आप प्रधानमंत्री के कर्तव्यों को पूरा करने में 'पंद्रह-सोलह घंटे प्रतिदिन श्रम करते हैं, पर अगर आप उसी में से कुछ समय निकालकर घंटा, आध घंटा खेती का कार्य कर लिया करें, तो यह आपके स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।"

टाल्सटाय की इस महानता, अद्‌भुत विद्वता और आर्थिक समृद्धि होते हुए भी किसान तथा मजदूरों के-से जीवन बिताने को देखकर रूस ही नहीं, संसार में प्रसिद्ध और "माँ" (मदर) नामक अमर उपन्यास के रचयिता मैक्सिम गोर्की ने एक बार लिखा था—

"उनकी तुलना में कोई भी व्यक्ति इतनी प्रतिभा नहीं रखता कि उसे 'जीनियस' (प्रतिभाशाली) की संज्ञा दी जा सके। उनसे अधिक जटिल, विरोधाभासपूर्ण, हर पहलू से महान्, अन्य कोई नहीं है। सचमुच टाल्सटाय हर दृष्टि से और हर बात में महान् है। वह एक अनूठे अर्थ में महान् है। उनका महत्त्व अत्यंत व्यापक हैं, जिसको शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनमें कुछ ऐसी विशेषतायें हैं, जिनके कारण मुझे हरेक से डंके की चोट पर कहना पड़ता है—'देखो, पृथ्वी पर यह कैसा अलौकिक पुरुष निवास कर रहा है ?' उनके बारे में कदाचित् यह कहना उचित होगा कि सार्वभौमिक दृष्टि से वह मानव है—मानव जाति के मानव।"

वास्तव में जिनकी कथनी और करनी में तनिक भी अंतर न हो, ऐसे महामानव संसार में कम ही होते हैं। उनके मानवतावादी दृष्टिकोण और संपत्ति का न्यायानुकूल वितरण संबंधी विचारों के कारण उनके घर वाले—उनकी स्त्री तक विरोधी बन गई, पर वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वार्थ के लिए परमार्थ के मार्ग को त्यागने के लिये कभी राजी नहीं हुए।

शिक्षा प्रचार का कार्यक्रम—

टाल्सटाय इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि केवल उपदेशों से संसार का सुधार नहीं हो सकता। जब तक लोगों के जीवन की परिस्थितियाँ नहीं बदली जायेंगी, उनको नवीन ढंग से शिक्षा-दीक्षा नहीं दी जायेगी, तब तक कोई प्रत्यक्ष परिणाम सामने नहीं आ सकता। इसलिये ग्रंथ-लेखन के साथ ही उन्होंने शिक्षा प्रचार का उद्देश्य भी अपनाया और सन् १८५६ में ही एक स्कूल की स्थापना करके स्वयं ही आस-पास के ग्रामीण बच्चों को पढ़ाने लगे। उस दिन उन्होंने अपनी डायरी में लिखा—

"मुख्य बात यह है कि मैंने अपने गाँव में सारे पड़ोस के लिए एक स्कूल खोलने का निश्चय कर लिया है और ज्ञान देने के लिये इस कार्य में जुट गया हूँ।"

कुछ समय पश्चात् अपने कार्यक्रम को विस्तारपूर्वक समझाते हुए उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा था—

"रूस की सबसे बड़ी आवश्यकता जन-शिक्षा है। हमारे पास इस प्रकार की शिक्षा की कोई सुविधा नहीं है और जब तक सरकार के हाथों में शिक्षा का प्रबंध है, हमें वे सुविधायें प्राप्त हो भी नहीं सकतीं। इसलिये जनता को शिक्षित करने का कार्य समाज को अपने हाथ में लेना चाहिये। प्रश्न उठ सकता है कि क्या सचमुच पढ़ने-पढ़ाने की कोई आवश्यकता है ? पर मेरे सामने यह समस्या नहीं है। मेरे स्कूल के छह महीने चलने के भीतर ही आस-पास तीन और स्कूल खुल गये हैं और उसमें आशा में अधिक कार्य हो रहा है।"

टाल्सटाय का उद्देश्य केवल दो-चार या अधिक स्कूल खोल देना नहीं था, वरन् वे शिक्षा प्रणाली में ऐसा परिवर्तन चाहते थे जो स्वाभाविक और सरल होते हुए भी शरीर, मन और चरित्र का ठीक ढंग से विकास कर सके। उस समय प्रचलित स्कूलों में उनको अनेक दोष दिखलाई पड़ते थे। उनमें बच्चों की सामाजिक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तिगत परिस्थितियों पर ध्यान दिये बिना सबको एक ही लाठी से हाँका जाता था। बालकों की आवश्यकता और त्रुटियों पर विचार किये बिना एक निश्चित शिक्षा क्रम नियत था और उसी के डंडे के जोर से सबके गले उतारा जाता था। टाल्सटाय ने इसके स्थान पर एक उपयोगी और ग्रामीणों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने लायक शिक्षा प्रणाली के निर्माण का संकल्प किया और इसके लिए जर्मनी, फ्रांस, स्विट्जरलैंड और रूस के अन्य प्रांतों की यात्रायें करके उन्होंने ग्राम विद्यालयों का अच्छी तरह निरीक्षण किया। पर उन्होंने अनुभव किया कि चाहे रूस के स्कूलों को देखा जाए और चाहे फ्रांस, जर्मनी आदि पश्चिमी भाग में बसने वाले देशों के चमक-दमक वाले स्कूलों को, पर उन सबकी पढ़ाई जीवन संबंधी आवश्यकताओं से दूर है। इसलिये सबका अनुभव प्राप्त करके उन्होंने स्वयं इस क्षेत्र में परीक्षण करने का निश्चय किया और अपने गाँव में ही किसान बालकों की शिक्षा के लिए एक स्कूल स्थापित कर दिया। इसका वर्णन करते हुए एक लेखक ने कहा है—

"विद्यालयों की इस दयनीय दशा को देखकर टाल्सटाय ने एक विशाल कार्यक्रम के साथ एक स्कूल खोला। यह एक नये ढंग का स्कूल था, जिसमें छात्रों की रुचि की खोज करके, उसी के आधार पर प्रशिक्षण दिया जाता था। अध्यापक यहाँ छात्रों के साथ उनका-सा ही जीवन व्यतीत करते थे और उनके साथ मित्र की तरह व्यवहार करते थे। रटने वाली बातों पर विशेष बल नहीं दिया जाता था। बच्चों को अपनी रुचि के अनुकूल कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। अतः अध्ययन उनके लिये भार न होकर मनोरंजन बन गया था। स्कूल की इमारत दो मंजिल की थी। ऊपर दो कमरे स्कूली पढ़ाई एवं कार्यालय के लिए और दो कमरे अध्यापकों के निवास के लिए थे। नीचे व्यायाम तथा खेती का सामान रखा जाता था।

स्कूल में लिखना-पढ़ना व्याकरण, धर्मशास्त्र, इतिहास चित्रकला, संगीत आदि बारह विषय पढ़ाये जाते थे। बच्चे अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इच्छानुसार दिन या रात की किसी कक्षा में पढ़ सकते थे। कक्षा का समय पूरा हो जाने पर भी वे अपने घर लौटना नहीं चाहते थे।

'यदि उस स्कूल के पढ़ने वाले बालक संतुष्ट और सुखी थे, तो पहले वाले अध्यापक भी खुशी राजी से पूरा कार्यक्रम अमल में लाते रहते थे। वहाँ के एक अध्यापक ने अपना अनुभव वर्णन करते हुए लिखा है—"स्कूल के काम से मुझे थकान नहीं होती, क्योंकि यहाँ किसी प्रकार की शुष्कता अथवा नीरसता मुझे कभी नहीं जान पड़ी। हर एक को यहाँ घर-सा ही अनुभव होता है। किसी को यहाँ एकदम सावधान होकर खड़े होने की आवश्यकता नहीं होती, जैसा अन्यत्र उच्च पदाधिकारियों के कमरे में प्रवेश करने पर होता है। इसका मतलब यह नहीं कि यहाँ अनुशासन का अभाव है। काउट (टाल्सटाय) पाठ्य पुस्तकों से कभी नहीं पढ़ाते। वे स्कूल का नया वातावरण बनाने के बारे में सोचते रहते हैं और उसी के अनुरूप पढ़ाते हैं। वास्तव में वे उस कार्य में सफल भी हुए हैं।"

स्कूल का काम कुछ वर्ष चल जाने पर उन्होंने शिक्षा प्रणाली की जाँच करने के लिये फिर जर्मनी, फ्रांस, बेलजियम, इग्लैंड और इटली आदि देशों की यात्रा की। पर वे जो कुछ चाहते थे, उसके दर्शन उनको कहीं भी नहीं हुए। उन्होंने देखा कि वहाँ की शिक्षा का मुख्य प्रयोजन सरकारी कर्मचारी और अधिकारी तैयार करना ही होता है। (जैसा कि किसी समय भारत में अंग्रेजी स्कूलों का उद्देश्य सरकार के लिए 'क्लर्क' तैयार करना कहा जाता था।) इसलिये उन्होंने पुनः घर लौटकर अपने स्कूल को ही अधिक उत्साह से चलाना आरंभ किया। उन्होंने आस-पास के स्थानों में भी वैसे ही इक्कीस स्कूल और खोले और उनमें पढ़ाने के लिए मास्को विश्वविद्यालय के छात्रों को बुलाया। इसी उद्देश्य से उन्होंने एक मासिक पत्रिका भी निकाली, जिसमें वे शिक्षा के नये तरीकों और उनके प्रचार के संबंध में लेख दिया करते थे। इसके अतिरिक्त स्कूल में पढ़ने वाले लड़कों के लेख तथा कहानियाँ भी उसमें प्रकाशित की जाती थीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन् १८६२ में उनको स्वास्थ्य संबंधी कारणों से अपनी रियासत से बाहर रहना पड़ा। उनके पीछे से पुलिस ने आपत्तिजनक साहित्य की खोज करते हुए उनके प्रेस की तलाशी ली। जब टाल्सटाय को इसका हाल मालूम हुआ तो उसको एक शिक्षा-संस्था के कार्य में इस प्रकार का सरकारी हस्तक्षेप बहुत बुरा लगा, इससे दुःखी होकर उन्होंने स्कूल और मासिक पत्रिका सबको बंद कर दिया। वह सत्य के अनुयायी थे और कोई काम छिपाकर करना अपना अपमान पसंद करते थे, इसलिए सरकारी व्यवहार से व्यथित होना उनके लिये स्वाभाविक था। उन्होंने इस बात को एक मित्र के लिये लिखे गये पत्र में इस प्रकार प्रकट किया था—

"तुम जानते हो कि स्कूल मेरे लिये क्या था ? उसे मैंने कैसे खोला था ? वह मेरा जीवन था। जिस काम से मुझे प्रसन्नता और शांति मिलती थी वह सब बिखर गया।"

कुछ वर्ष तो वह 'युद्ध और शांति' नामक प्रसिद्ध उपन्यास की रचना में लगे रहे, पर १८६५ में उन्होंने फिर स्कूल के विचार को पुनर्जीवित किया। उस समय के एक पत्र में उन्होंने लिखा है—"मैं आज भी शिक्षा के बारे में बहुत कुछ सोचता हूँ और उन घड़ियों की प्रतीक्षा में हूँ, जब अपने बच्चों को फिर पढ़ा सकूँगा। मैं फिर नया स्कूल खोलकर अपने शिक्षा संबंधी विचारों को कार्यरूप में परिणत करने वाला हूँ।"

पाठक यह ख्याल न करें कि टाल्सटाय का विचार स्कूल खोलकर कोई जगत् प्रसिद्ध संस्था का विशालकाय विश्वविद्यालय निर्माण करना था। वे तो वर्तमान सामाजिक प्रणाली को ही सदोष समझते थे और लोगों के सामने नव-निर्माण का एक नमूना पेश करना चाहते थे। वे जानते थे कि उनके प्रयत्न से दुनिया शीघ्र ही नहीं बदल सकती, पर इसका अर्थ यह नहीं कि सच्चे विचारक भी उसी के साथ चलने लग जायें और जिस बात को गलत समझते हैं, उसके विरोध में से आवाज न उठायें। टाल्सटाय का स्कूल संबंधी कार्य एक प्रकार से बीज रूप था, जो समय-समय पर ऐसे ही स्वतंत्र विचारकों के हृदय में जड़ पकड़ता रहा और समय-समय पर छोटे-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़े रूपों में प्रकट होता रहा। भारतवर्ष में भी महात्मा गांधी ने 'बुनियादी शिक्षा' के रूप में उसका प्रचार किया और उसके सिद्धांतों को समझाने के लिये 'बुनियादी तालीम' नाम की मासिक पत्रिका भी निकाली। चाहे भारत के स्कूलों और कॉलेजों की दशा आज और भी शोचनीय हो रही है, पर इससे टाल्सटाय और महात्मा गांधी के प्रयत्न व्यर्थ नहीं समझे जा सकते। वे अपना प्रभाव उपयुक्त व्यक्तियों पर डालते रहते हैं और समयानुसार प्रकट होते हैं। आज जो दुर्दशा हम स्वराज्य और स्वाधीनता की देख रहे हैं, वह सामाजिक उतार-चढ़ाव की तरह है। जबकि टाल्सटाय जैसे महामानवों के कार्य सत्य की खोज में भटकती मानवता के लिए निरंतर प्रकाश स्तंभ की तरह आशा और विश्वास का संदेश देकर धैर्य बँधाते रहते हैं।

अपने जीवन के अंतिम समय तक टाल्सटाय अपने लेखों और कार्यों के द्वारा लोगों को यही शिक्षा देते रहे कि सब मनुष्य एक ही भगवान् के उत्पन्न किये हैं, उनको हर हालत में प्रेम और सहयोग-पूर्वक ही रहना चाहिए। आज जो एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को मार रहा है, शोषण कर रहा है, ठग रहा है, उसका मूल कारण 'शैतान' (अधर्म और स्वार्थपरता) की प्रधानता ही है। सच्चा 'धर्म' वही है, जो मनुष्यों को दूसरे लोगों की सेवा और परोपकार की प्रेरणा दे। उनका यह सिद्धांत महात्मा गांधी के इस आदर्श से मिलता-जुलता ही था कि वैष्णव जन तो तेने कहिये जो पीर पराई जाणे रे।'' इसी आदर्श को पूरा करने के लिये टाल्सटाय ८२ वर्ष की आयु में अपनी संपत्ति और वैभव को त्यागकर एक 'संन्यासी' की तरह घर से निकल पड़े। उस समय बाहर रहकर रूस की ठंड को बर्दाश्त करने की शक्ति उनके शरीर में नहीं रह गई थी। इस मार्ग में ही वे बीमार पड़ गये और एक स्टेशन के छोटे से कमरे में किसी गरीब व्यक्ति की तरह उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। टाल्सटाय आज नहीं हैं, पर उनके मानवतावादी विचार और आदर्श अब भी करोड़ों मनुष्यों को प्रेरणा देकर एक 'नये संसार' के निर्माण में संलग्न हैं।

❐ ❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org